राजुल

जैन चित्र कथा

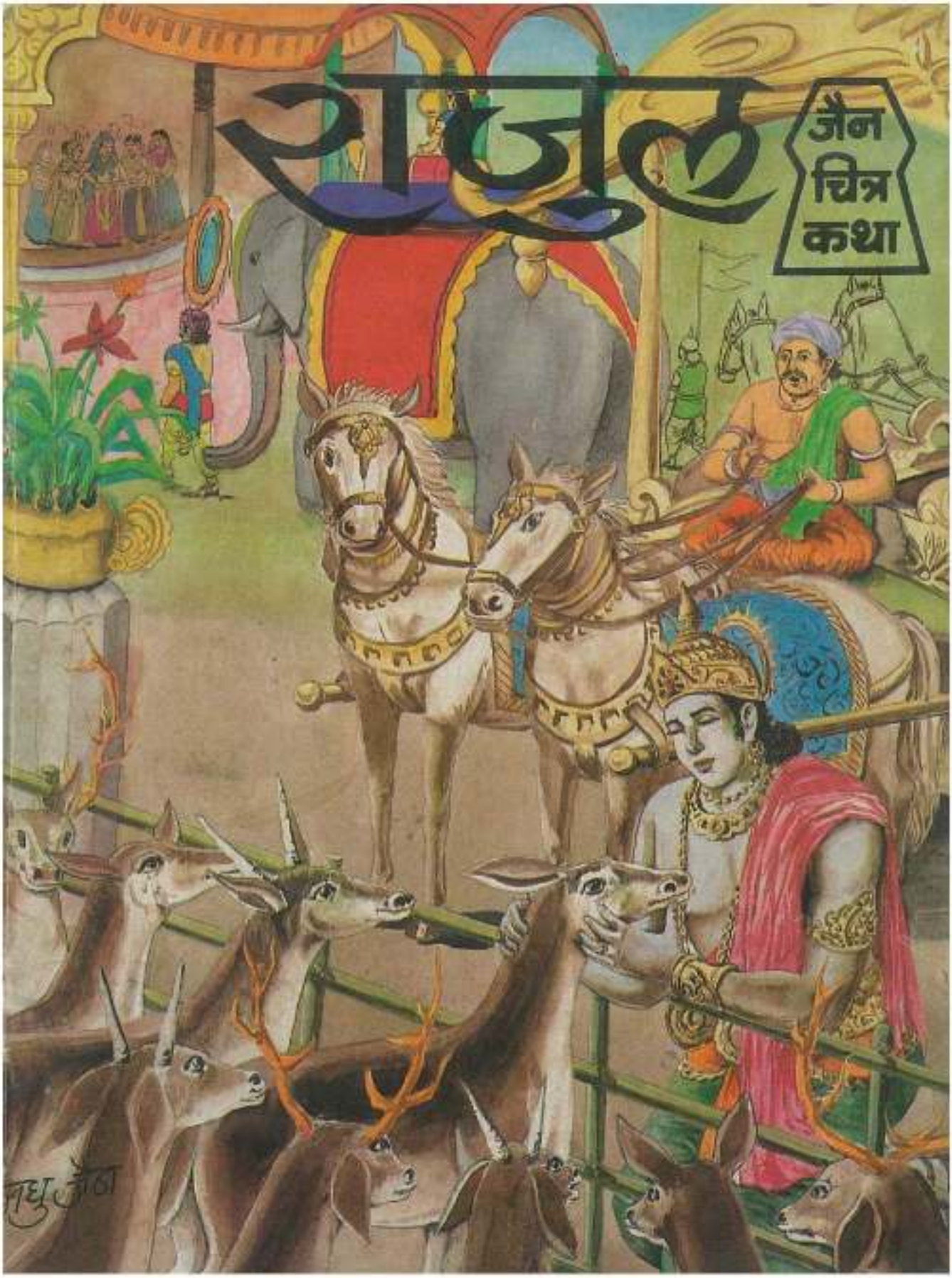

सम्पादकीय :—राजुल

नेमीनाथ की बरात विवाह मण्डप के तोरण द्वार तक पहुँच ही रही थी कि रास्ते में निरीह प्राणियों का करुण-क्रन्दन वेध गया। विवाह का विचार त्याग वन को चल दिये। उनकी जीवन धारा राग से विराग की ओर भोग से त्याग की ओर बढ़ चली। नेमीनाथ ने जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर तपस्या में लीन हो गये। समाचार अन्त:पुर में राजकुमारी राजुल को मालूम हुए। मेंहदी लगवाती राजुलमति ने सिर उठाया। पूरा नगर सजा था। मेहमान आये हुए थे। विवाह मंडप में पवित्र बेदी सजी थी। राजकुमारी से उसके माता पिता ने कहा, बेटी शोक न करो। लग्न बेला टली नहीं। हम किसी और राजकुमार के संग तेरा विवाह कर देंगे। पिताजी। हाँ। स्त्री के जीवन में पति तो एक ही होता है, ना जाने मेरे किस जन्म का पाप कर्म सामने आया कि मेरे पति ने मुझे त्याग दिया। अब मैं दूसरा पाप नहीं करना चाहती। वे मेरे पति हैं और उनके चरणों में ही मेरा स्थान है। मेरा मार्ग भी वही है जो उनका है। जिस राह से वे गये हैं उसी रास्ते से जाना होगा। यह कहकर राजकुमारी राजुल ने अपना श्रृंगार त्याग दिया, घर त्याग दिया और गिरीनार पर्वत की ओर चल दी। अथक प्रयत्न करने पर वह दूसरे से विवाह करने के प्रस्ताव से सहमत नहीं हुई और स्वामी नेमिनाथ के समीप गिरीनार पर्वत पर पहुँच कर उन्हीं से साध्वी दीक्षा ग्रहण कर तपस्वनी बन गई।

राजमति ने एक बार मन से निश्चित किए हुए पति के अतिरिक्त किसी से विवाह न कर अपने पति का अनुगमन करके महान सती का आदर्श उपस्थित किया। जैन धर्म में जिस तरह नेमीनाथ तीर्थंकर को स्मरण किया जाता है उसी प्रकार २४ महासतियों में राजुल का पवित्र नाम भी प्रात: स्मरणीय है। नारी तपश्चरण करने में स्वतंत्र है। त्याग और साधना के मार्ग में उच्च स्थान प्राप्त है। आज की नारीयों को पुरुष की दासता को छोड़ नारी समाज की दुर्दशा का नाश करना है, उसके पतन को रोकना है तो अवश्य ही संसार के त्याग मार्ग पर आरूढ़ होना चाहिए। ताकि हम सभी नेमी-राजुल के समान आदर्श उपस्थित कर सकें। नारी का जीवन समाज में प्रतिष्ठित और धर्म क्षेत्र में परम पूज्य हो। आशा है।

प्रकाशक : आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थमाला, गोधासदन अलसीसर हाउस संसार चंद रोड़ जयपुर
सम्पादक : ब्र. धर्मचंद शास्त्री, ज्योतिषाचार्य प्रतिष्ठाचार्य
लेखक : मिश्रीलाल जी एडवोकेट
चित्रकार : मधु जैन बम्बई

जैन चित्र कथा कार्यालय
दि. जैन मन्दिर गुलाब वाटिका
दिल्ली सहारनपुर रोड दिल्ली (U.P.)

वर्ष २ अंक १७ मूल्य ६.००- जुलाई १९८९

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक प्रकाशक तथा सम्पादक धर्मचंद शास्त्री द्वारा जुबली प्रिन्टर्स से छप कर धर्मचंद शास्त्री ने जयपुर से प्रकाशित की।

☐ जैन चित्र कथाओं के प्रकाशन के इस पावन पुनीत महायज्ञ में हमें सहयोग प्रदान करें—

आजीवन सदस्य 1501/= संरक्षक 5001/= परमसंरक्षक 11111/=

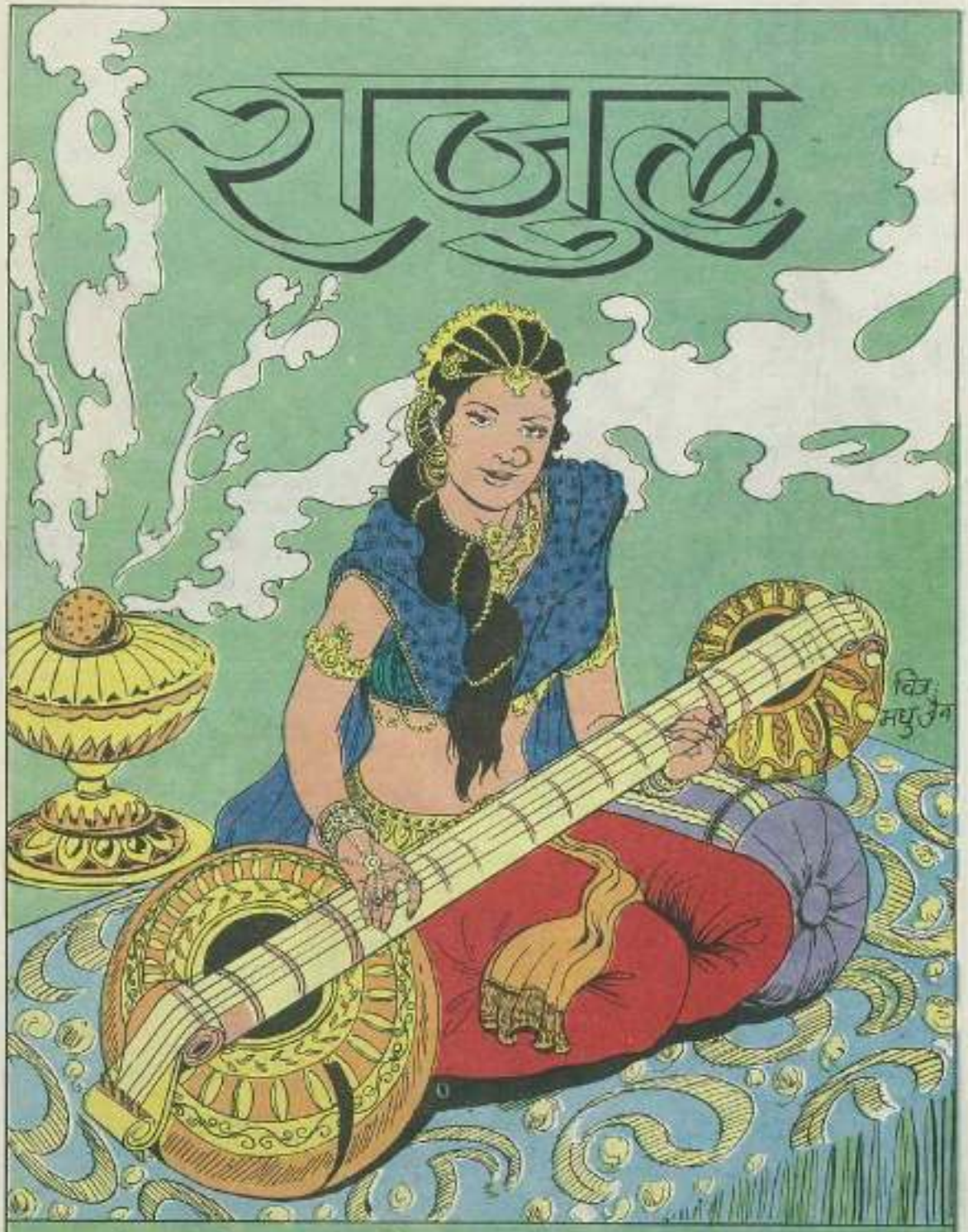

राजकुमारी राजुल की सुन्दरता की प्रसिद्धि भारतवर्ष में फैली हुई थी। वह जूनागढ़ के राजा की पुत्री थी।

रात्री का प्रथम पहर। जूनागढ़ के राज महल के एक सज्जित कक्ष में महाराज उग्रसेन और उनकी पत्नी रानी चर्चा में व्यस्त हैं।
स्वामी! अपनी बेटी राजुल विवाह योग्य हो गई है और आप कोई चिन्ता नहीं करते।
देवी! इसमें चिन्ता करने की क्या बात है। अपनी बेटी सुन्दर और सुशील है।
स्वामी! तो क्या बिना प्रयत्न किये ही...?
हाँ देवी! अनेक राजघरानों से बेटी राजुल के विवाह हेतु प्रस्ताव आ रहे हैं, पर...
पर... पर क्या स्वामी?
मेरा मन नहीं करता। मैं राजुल का विवाह द्वारावती नगरी के राजा समुद्रविजय और शिवादेवी के पुत्र राजकुमार नेमिनाथ से करना चाहता हूँ।

नेमिनाथ में ऐसे क्या विशेष गुण हैं स्वामी?
वह महान पराक्रमी, सुन्दर एवं धार्मिक है।
आपको कैसे मालूम?
मैं क्या उसे जानता नहीं हूँ? कुरुक्षेत्र के युद्ध में उसने नारायण श्रीकृष्ण और पांडवों की ओर से लड़ कर महान पराक्रम दिखाया था।
इतने गुण एक व्यक्ति में कहाँ मिलते हैं! आप अवश्य बेटी राजुल का विवाह नेमिनाथ से कर दीजिये।

एक दिन जब महाराज उग्रसेन अपने मन्त्री, सेनापति और सभासदों सहित राज दरबार में बैठे थे-
अन्नदाता! इरावती नगरी के महाराजा समुद्रविजय और द्वारकाधीश श्रीकृष्ण का दूत महाराज के दर्शनों की आज्ञा चाहता है।
आज्ञा है।
राजदूत दरबार में प्रवेश करके रत्न मंजूषा भेंट करने के पश्चात महाराज से निवेदन करता है।
महाराज! द्वारकाधीश श्रीकृष्ण ने सन्देश भेजा है कि वह अपने भाई राजकुमार नेमिनाथ का विवाह आपकी पुत्री राजकुमारी राजुल से करना चाहते हैं।
दूत! क्या इस प्रस्ताव में राजकुमार नेमिनाथ के पिता महाराज समुद्रविजय की भी स्वीकृति है?
जी हाँ महाराज।
दूत! महाराज समुद्रविजय और श्रीकृष्ण से जाकर कहना कि यह सम्बन्ध हमें प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार है।
और उस राजदूत को वस्त्राभूषण भेंट करके विदा किया

बारात जूनागढ़ में प्रवेश कर रही है। एक सज्जित रथ में श्रीकृष्ण पांडवों के साथ शोभायमान हैं। अश्व, हाथी और रथों की पंक्तियों के आगे हर्षोल्लास को दर्शाते संगीत रचते वाद्ययन्त्रों सहित वादक-बारात एक भव्य दृश्य की भाँति सजी हुई दर्शकों की भीड़ के बीच आगे बढ़ती है-

बारात के मध्य भाग में एक भव्य और दिव्य रथ में युवा राजकुमार नेमिनाथ बैठे हैं।

बारात जूनागढ़ के दुर्ग के मुख्य द्वार के समीप पहुँचती है। दिव्य, भव्य, सुन्दर अलंकारों से सज्जित राजकुमारी दुर्ग के मार्ग में बने विशाल-सुन्दर स्वागत स्थल पर अपनी सहेलियों के साथ वरमाला लिये बारात की प्रतीक्षा कर रही है। सखियाँ सहेलियाँ गा रही हैं।

बारात दुर्ग के निकट आती है। पथ की एक ओर एक बाड़े में हिरण व विभिन्न जाति के पालतू पशु बंद हैं। राजकुमार नेमिनाथ इन पशुओं की चीत्कार सुनकर विचलित हो जाते हैं।

नेमिनाथ का हृदय करुणा से भर जाता है

नेमिनाथ के विषाद से पिघले पिघले हृदय से निश्चय के साथ आने वाले समय का पूर्वाभास एक घोषणा की तरह इन बोलों में फूट निकला।

नेमिनाथ का रथ सारथी पशुओं के बाड़े के पास ले जाता है। नेमिनाथ रथ से उतर कर बाड़े के द्वार तक आते हैं।

नेमिनाथ पशुओं के बाड़े का दरवाजा खोल देते हैं। उनके हृदय में इससे जो सकून मिला वह उनके अधरों पर उभरी स्वर्गिक मुस्कान में दिखलाई पड़ी। बाड़े से निकल कर वध करने को लाये गये बन्दी पशु जंगल की ओर भागते हैं।

नेमिनाथ के अधरों की मुस्कान विलीन सी हो जाती है। निश्चयात्मक गंभीरता दिखाई देती है।

नेमिनाथ सहसा एक जन विहीन पथ की ओर बढ़ने लगते हैं। सारथी आश्चर्य चकित रह जाता है।

नेमिनाथ मुड़कर नहीं देखते । चलते-चलते कहते हैं-
मृत्यु आये इसके पूर्व मुक्ति प्राप्त करना चाहता हूँ।
नेमिनाथ निर्जन पथ पर बढ़े चले जाते हैं।
नेमिनाथ गिरनार पर्वत के शिखर पर पहुँच कर समस्त वस्त्र-आभूषण उतारते हैं और दिगम्बर वेष में पद्मासन मुद्रा में एक शिलाखण्ड पर बैठ जाते हैं-
सिद्धम् नमः
अपने हाथों से अपने केश उखाड़ते हैं।
मैं देह नहीं आत्मा हूँ। संसार की किसी भी वस्तु से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।

प्रातः जूनागढ़ के राजमहल के एक सज्जित कक्ष में शोकाकुल राजुल को महारानी सान्त्वना दे रही हैं-

बेटी ! राजकुमार नेमिनाथ दिगम्बर संन्यासी बन गये हैं। उन्हें सान्सारिक मार्ग पर लाना असम्भव है।
माँ जिन्हे पशुओं की करुण पुकार संन्यासी बना सकती है उन्हे नारी की करुण याचना वापस भी ला सकती है।

बेटी। यह असंम्भव है। नेमिनाथ को भूल जा इसी में तेरा कल्याण है।
क्यों माँ !

दिगम्बर श्रमण प्राण दे सकते हैं। परन्तु एक बार मुनिधर्म ग्रहण करने के बाद मुनिधर्म नहीं छोड़ते !
माँ ! देखना तो सही मैं अपने रूप और कौशल से उन्हें लौटा लाऊँगी !

हाथों-पाँवों में मेंहदी, पगतलियों में महावर-लाली। अनुपम सुन्दरी। अनुपम श्रृंगार। सज्जित राजुल गिरनार पर्वत पर अकेली चढ़ रही है...

विजन और चढ़ाई पर राजुल मार्ग में मिलने वाले वनफूलों से ही बातें करती चलती है-

चारों ओर सघन वन में राजुल को हिरण, मोर कोयल आदि पशु-पक्षी दिखते हैं।

चढ़ाई कठिन होती जाती है। राजुल पसीने से नहा जाती है। पाँवों से खून निकलने लगता है।
स्वामी तुम कहाँ हो ?
धीरे-धीरे कठिनाई से राजुल गिरनार पर्वत के शिखर तक पहुँचती है। देखती है नेमिनाथ के बहुमूल्य वस्त्र-आभूषण एक स्थान पर पड़े हैं।
और फिर राजुल की दृष्टि एक शिलाखण्ड पर पड़ी जहाँ नेमिनाथ पद्मा-सन नासिग्र दृष्टि ध्यानस्त दिगम्बर मुद्रा में विराज रहे थे...
स्वामी प्रणाम

दिगम्बर मुद्रा में पद्मासन विराजमान नेमिनाथ के सम्मुख कर्तव्य विमूढ़ राजुल खड़ी थी।

साधना में ध्यानमग्न श्रमण नेमिनाथ मौन थे, मौन ही रहे, राजुल को लगा जैसे कोई कह रहा हो –

"विस्मय"- आश्चर्य से राजुल चारों ओर देखती है। भयानक जंगल के अलावा कुछ नहीं दिखता।

राजुल ने एक बार फिर श्रमण नेमिनाथ की ओर देखा और स्वयं को ही सम्बोधित कर बोली-
राजुल! नारी का सच्चा सुख पति के मार्ग पर चलने में है। सुन्दरता सदैव नहीं रहती। वासना पाप है।
और राजुल के मुख पर प्रसन्नता लौट आती है
हे श्रमण नमोस्तु! आपकी राजुल ने आपका मौन सन्देश सुन लिया है।
नेमिनाथ श्रमण ने एक क्षण को नयन खोले और बन्द कर लिये
हे श्रमण! अब राजुल भी आपके मुक्ति पथ का पालन करेगी।

सच्चे सुख - मुक्ति मार्ग प्राप्त करने के लिए राजुल गिरनार पर्वत से मधुर स्वर में गाती लौट चली

गिरनार पर्वत के तल में स्थित एक प्राकृतिक गुफा में राजुल सामयिक साधना में रत है -

श्रमण नेमिनाथ ऊर्जन्त गिरनार पर्वत के शिखर पर साधना रत हैं। वहाँ पर भी उनके दर्शन लाभ के लिए स्त्री-पुरुष बहुत उत्साह पूर्वक आ रहे हैं।

एक दिन सहसा एक दिव्य आलोक। तेजोवलय श्रमण नेमिनाथ के चारों ओर फैल गया। श्रमण नेमिनाथ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

स्वर्गलोक में अपने एक विशाल अनुपम सज्जित सभाकक्ष में इन्द्र और शचि-इन्द्राणी तथा अनेक देवी देवता एक अप्सरा के सुन्दर नृत्य का आनन्द ले रहे हैं।

सहसा इन्द्र का आसन काँपता है और सभी उपस्थित देवी देवता भयभीत हो जाते हैं।

इन्द्र ने कुछ क्षण ध्यान लगा कर सोचा।
सहसा इन्द्र के मुख मण्डल पर मुस्कान उभरती है और वे शचि और देवी-देवताओं से कहते हैं
देवी शचि। महान शुभ संकेत है। गिरनार पर्वत पर श्रमण नेमिनाथ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ है। तीर्थंकरों की परम्परा में वे २२ वे तीर्थंकर हो गये हैं।

स्वामी। तीर्थंकर का पद देवलोक के स्वामी से भी बड़ा होता है क्या?
हाँ देवी!
यह केवलज्ञान क्या होता है स्वामी?
ज्ञान की पूर्णता को केवलज्ञान कहते हैं।
कुछ समझ में नहीं आया स्वामी! कुछ विस्तार से बताइये न।
हम दिखने वाली वस्तुओं को देखते हैं। ज्योतिष ज्ञान से बीती हुई और आने वाली बातों को जानते हैं परन्तु केवलज्ञान एक साथ सब को जानता है।

देव ! आपके साथ मैं भी तीर्थंकर नेमिनाथ के दर्शनों को चलूँगी।
तुम अकेली ही क्यों देवी ! तीर्थंकर प्रभु की वन्दना के लिये सभी देवी-देवता भी चलेंगे ।
देवराज इन्द्र के इस निर्णय को सुनकर सभा में उपस्थित सभी देवी देवता प्रसन्न होते हैं।

देवताओं के मध्य एक की ओर इन्द्र संकेत करते हैं-
कुबेर ! तीर्थंकर की धर्म सभाएँ होंगी। संसार को उनकी दिव्य वाणी सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इन धर्म सभाओं की व्यवस्था तुम्हें करनी है।
जो आज्ञा स्वामी।

इन्द्र, इन्द्राणी, देवी-देवता गिरनार पर्वत पर जाकर तीर्थंकर नेमिनाथ की वन्दना करते हैं।

कुबेर अद्भुत धर्मसभा-समोशरण की रचना करते हैं। मुनि, साध्वी, देवी, देवता, राजा, महाराजा, पशु-पक्षी तक अपने-अपने दायरे में हैं। सहस्र पंखुरी कमल पर, उसको छुए बिना तीर्थंकर विराजे हैं।

नेमिनाथ भगवान की दिव्यवाणी मुखरित हुई-
इस संसार में चेतन और अचेतन पदार्थों के अलावा कुछ नहीं है। सारी श्रष्टि इन्हीं मूल पदार्थों से बनी हैं। जीव को आत्मा के नाम से पुकारते हैं। अचेतन में धर्म, अधर्म, आकाश और काल सम्मिलित हैं।
एक जिज्ञासु श्रोता ने प्रश्न किया -
भगवन्! इस दुनिया को किसने बनाया है?
वत्स। यह संसार सदैव से है और सदैव रहेगा। वस्तुओं का रूप बनता-बिगड़ता रहता है परन्तु मूल वस्तु सुरक्षित रहती है। उसे ध्रुवता कहते हैं।
एक अन्य श्रोता अपनी शंका समाधान करने के लिये भगवान नेमिनाथ से पूछता है-
भगवन! संसार में मनुष्य के अलावा भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणी पाये जाते हैं इसका क्या कारण है?
वत्स! सब प्राणी अपने कर्मों से पंच तत्वों से जुड़े हैं और अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं।

धर्मसभा विसर्जित हो गई। तीर्थंकर नेमिनाथ गिरनार पर्वत से नीचे उतर रहे हैं। पीछे श्रमण श्रमणियों का समुदाय चल रहा है। साध्वी राजुल भी सफेद सारिका पहने चल रही है।

तीर्थंकर लोक कल्याण के लिये भ्रमण करते हैं

मार्ग में पशु पक्षी अपना बैर भूल कर खड़े दिखते हैं। सिंह के समीप हिरण-गाय तथा सर्प के निकट मोर विचर रहे हैं। बिना मौसम के फल-फूल पल्लवित हो रहे हैं -

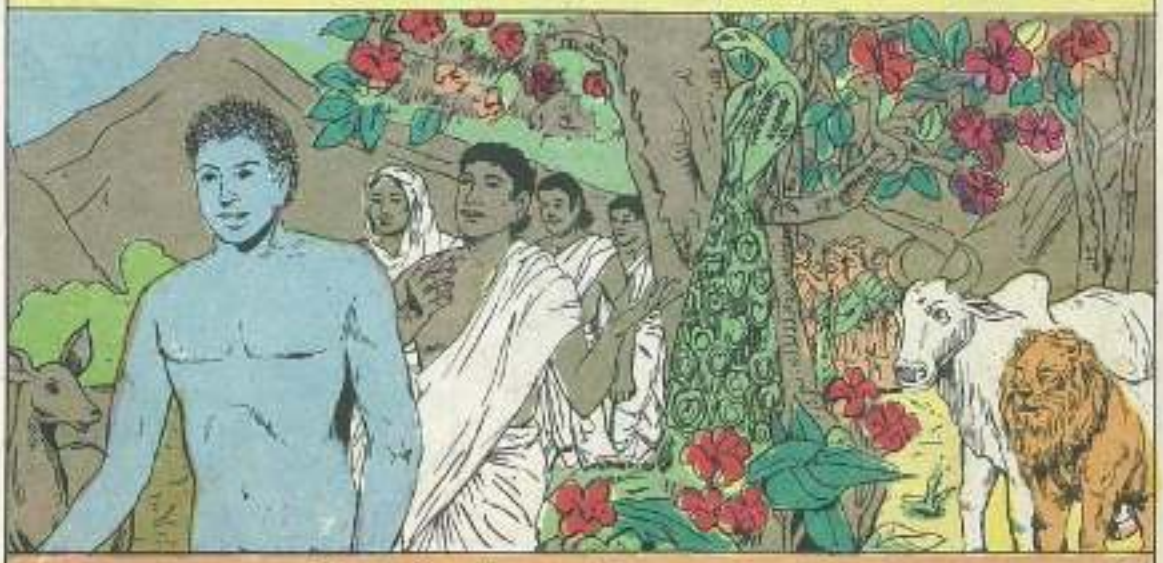

यह सब पुण्य का फल है। तीर्थंकर के प्रभाव से पशु, पक्षी तक जन्मजात शत्रुता भूल जाते हैं

गिरनार पर्वत से उतर कर प्रभु जूनागढ़ आते हैं।
नगर के बाहर कुबेर समवशरण की रचना करता है।
सभी मनुष्य समान हैं। मनुष्यों की भाँति पशु-पक्षियों में भी आत्मा होती है। इनकी रक्षा करना मनुष्य का कर्तव्य है और इनको मारना पाप है।
भगवन! तप क्या होता है?
इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती। उनका रोकना ही तप है।

समवशरण फिर विघटित हो जाता है और प्रभु सम्पूर्ण देश में विहार करते हैं।

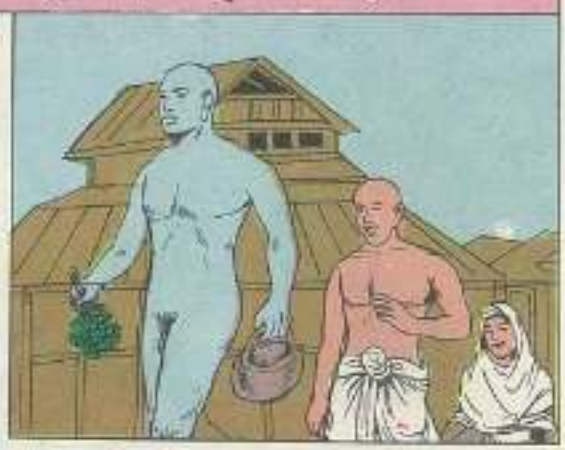

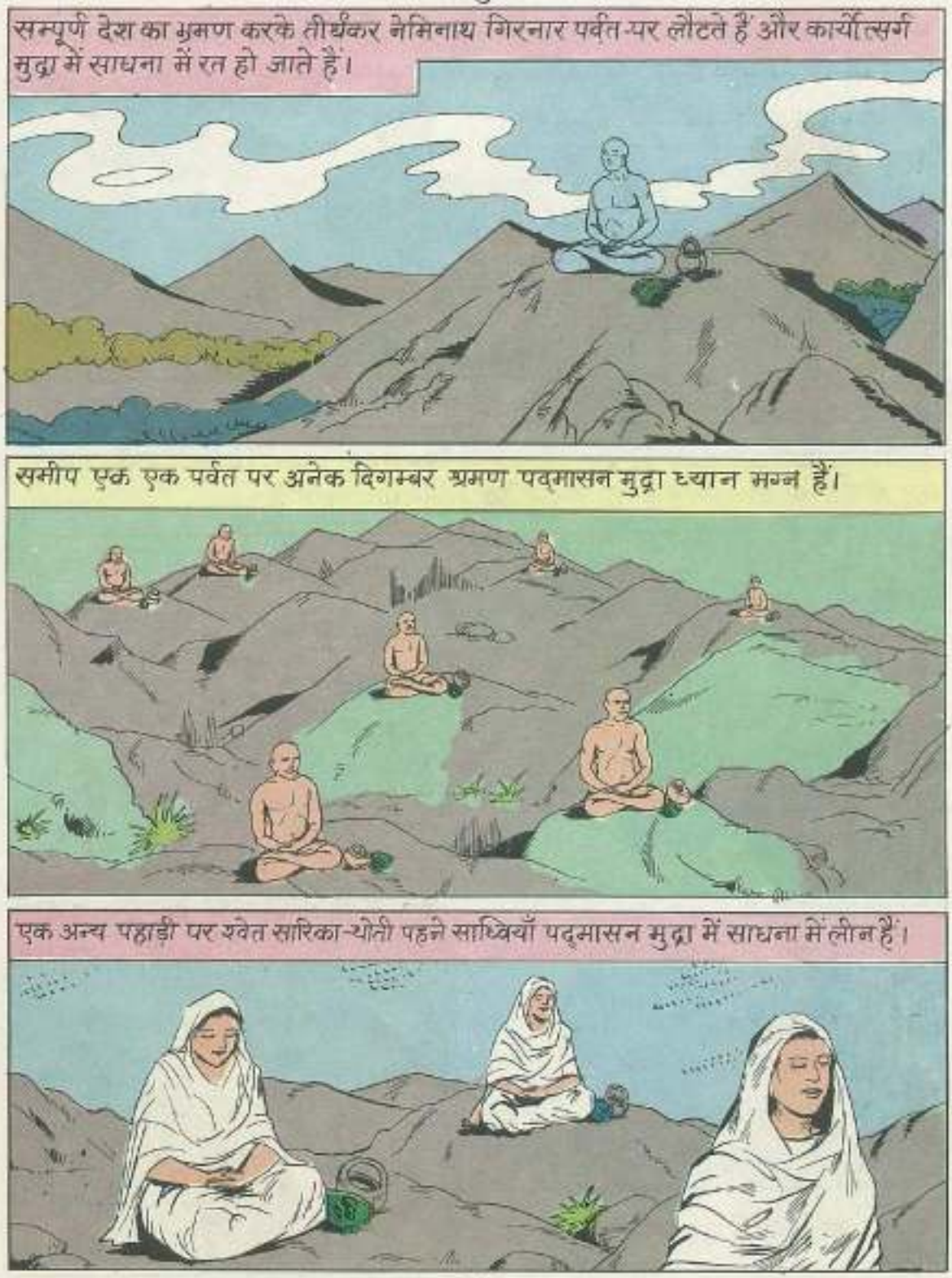
सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके तीर्थंकर नेमिनाथ गिरनार पर्वत पर लौटते हैं और कार्योत्सर्ग मुद्रा में साधना में रत हो जाते हैं।
समीप एक एक पर्वत पर अनेक दिगम्बर श्रमण पद्मासन मुद्रा ध्यान मग्न हैं।
एक अन्य पहाड़ी पर श्वेत सारिका-धोती पहने साध्वियाँ पद्मासन मुद्रा में साधना में लीन हैं।

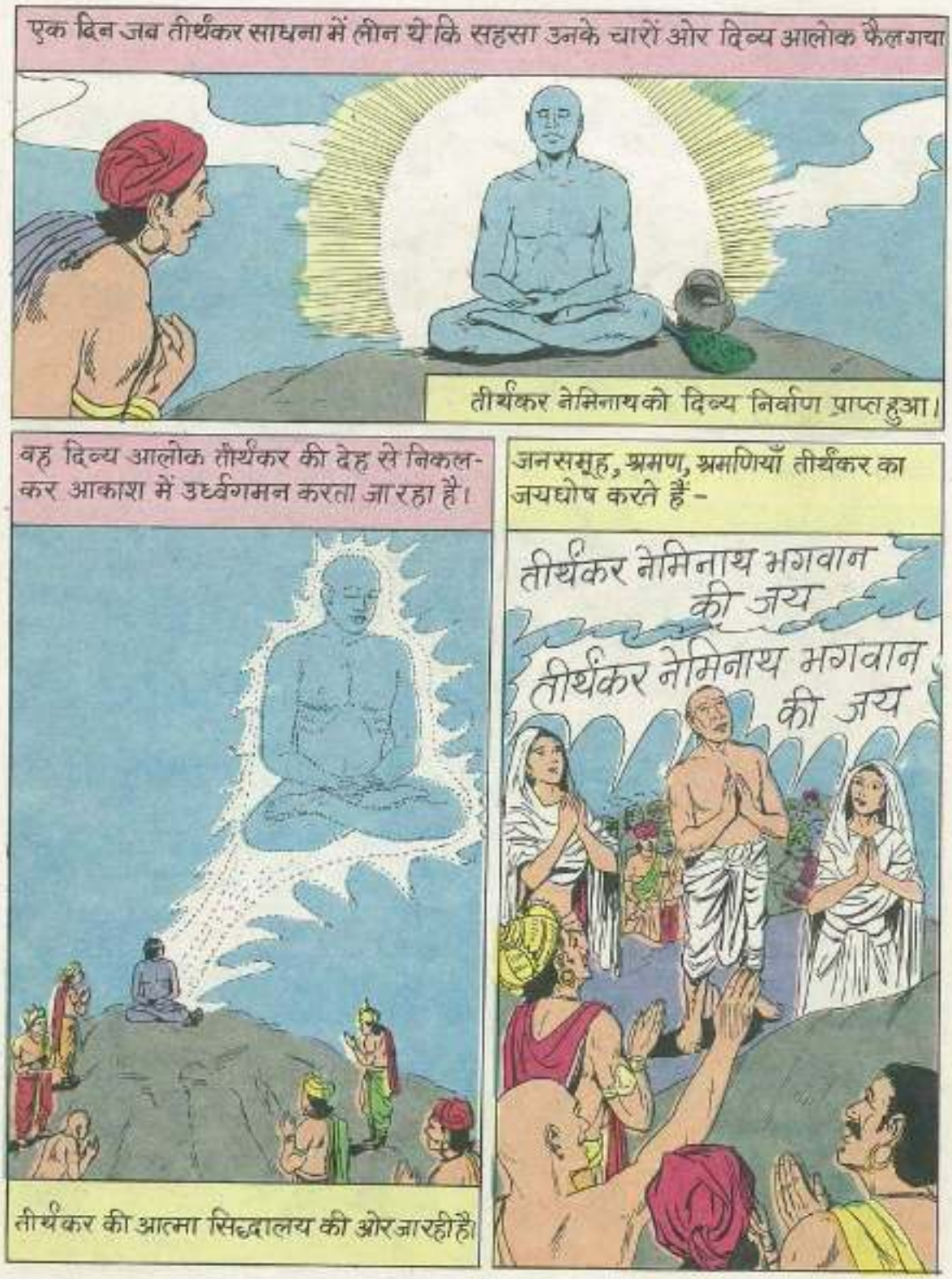
एक दिन जब तीर्थंकर साधना में लीन थे कि सहसा उनके चारों ओर दिव्य आलोक फैल गया।
तीर्थंकर नेमिनाथ को दिव्य निर्वाण प्राप्त हुआ।
वह दिव्य आलोक तीर्थंकर की देह से निकल-कर आकाश में उर्ध्वगमन करता जा रहा है।
तीर्थंकर की आत्मा सिद्धालय की ओर जा रही है।
जनसमूह, श्रमण, श्रमणियाँ तीर्थंकर का जयघोष करते हैं -
तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान की जय
तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान की जय

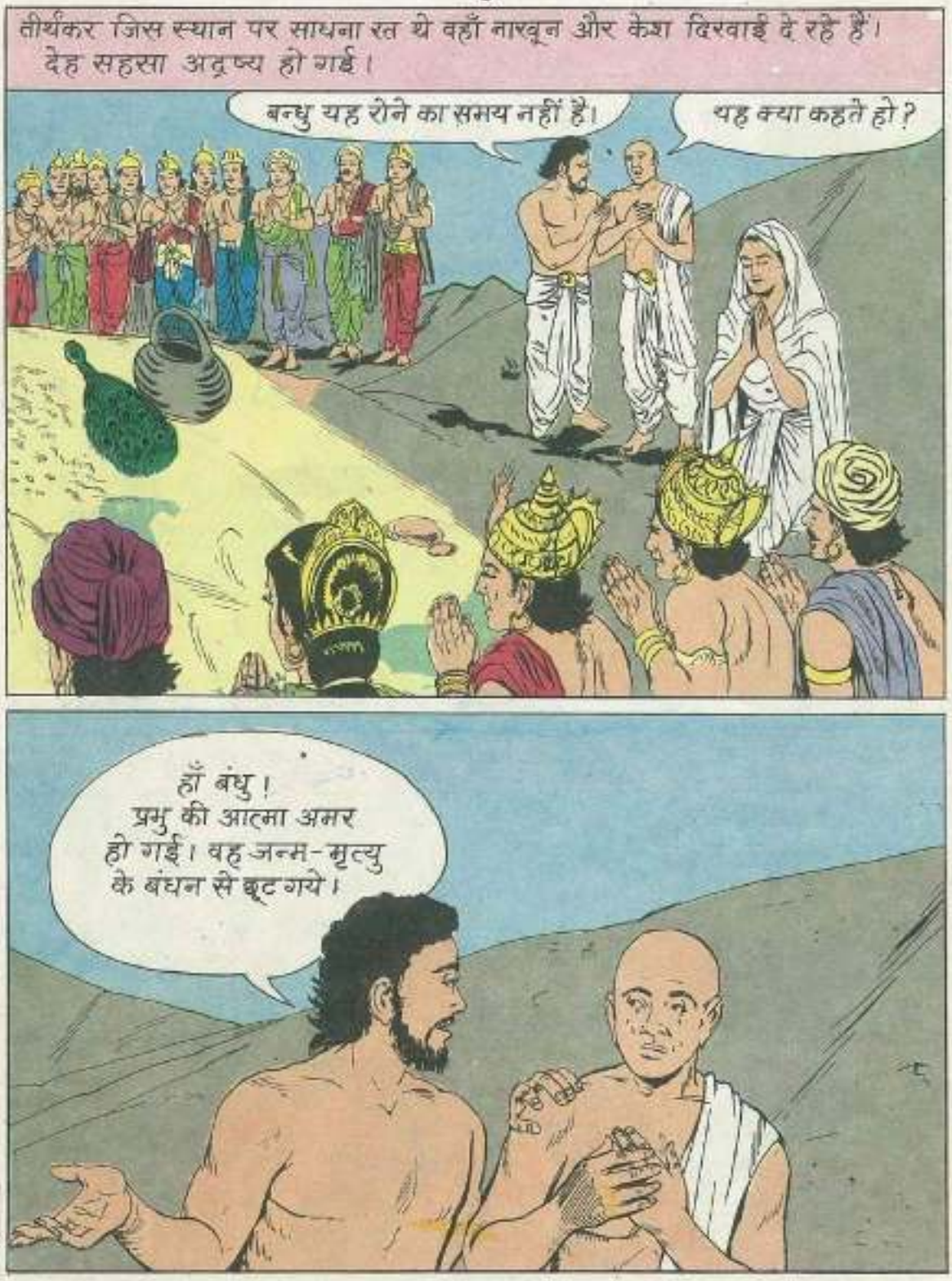
तीर्थंकर जिस स्थान पर साधना रत थे वहाँ नाखून और केश दिखाई दे रहे हैं। देह सहसा अदृष्य हो गई।
बन्धु यह रोने का समय नहीं है।
यह क्या कहते हो?
हाँ बंधु! प्रभु की आत्मा अमर हो गई। वह जन्म-मृत्यु के बंधन से छूट गये।

एक श्रावक आकाश से उतरते हुए विमान की ओर जनसमुदाय का ध्यान केन्द्रित करता है
देखो ! देवलोक से देवी देवता भी निर्वाण महोत्सव मनाने आ रहे हैं।

देवलोक से इन्द्र और इन्द्रानी शचि का विमान भी निर्वाण स्थल पर पहुँच उतरता है।

देवराज इन्द्र सभी देवी देवताओं को निर्वाण स्थल की आराधना करने का निर्देश देता है।

सभी नर, नारी, देवी, देवता गण एक स्वर में अर्हत नेमिनाथ की आराधना करते हैं।

देवराज इन्द्र तीर्थंकर नेमिनाथ के नख एवं केश रुपी पवित्र अवशेष एकत्रित करता है -

और अग्नि कुमार देव अग्नि प्रज्जवलित कर अन्तिम संस्कार करते हैं।

और इस संसार में प्रभु की दिव्य वाणी शेष रह गई जो हर युग में सत्य और अहिंसा का सन्देश देती रहेगी।

सुनो सुनायें सत्य कथाएँ

जैन चित्र कथा

नई पीढ़ी को अच्छी शिक्षा के लिए
हमारे नये अंक में
नया उत्साह, उमंग, ज्ञान रस से भरपूर, जीवन को प्रेरणा
देने वाली रोचक एवं मनोरंजक कहानियां

रंग बिरंगी दुनियाँ में
आपके नन्हें मुन्नों के लिए ज्ञान वर्धक टानिक
जैन चित्र कथा पढ़ें तथा पढ़ावें

अब तक प्रकाशित जैन चित्र कथाएँ।

(1) तीन दिन में
(2) भाग्य की परीक्षा
(3) त्याग और प्रतिज्ञा
(4) आटे का मुर्गा
(5) करे सो भरे
(6) कविरत्नाकर
(7) चमत्कार
(8) प्रद्युम्न हरण
(9) सत्य घोष
(10) सात कोड़ियों में राज्य
(11) टीले वाले बाबा
(12) चंदना
(13) ताली एक हाथ से बजती रही
(14) सिकन्दर और कल्याणमुनि
(15) चारित्र चक्रवर्ति
(16) रूप जो बदला नहीं
(17) राजुल
(18) स्वर्ग की सीढ़ियाँ

आगामी प्रकाशन

(1) अंजना
(2) मुनि रक्षा
(3) गाये जा गीत जीवन के
(4) क्या रखा है इसमें
(5) चरित्र ही मन्दिर है
(6) मुक्ति का राही
(7) आत्म कीर्तन
(8) महारानी भामाशाह
(9) आचार्य कुन्दकुन्द
(10) रामायण
(11) नन्हें मुन्हें
(12) एक चोर
(13) सोने की थाली
(14) नाग कुमार
(15) तीसरा नेत्र
(16) बेताल गुफा
(17) चन्द्रप्रभु तीर्थंकर
(18) जल्लाद का अहिंसाव्रत
(19) निकलंक का जीवन दान
(20) महारानी मृगावती
(21) नेमीनाथ
(22) दलदल में फंसा बैल
(23) आओ चलें हस्तिनापुर
(24) सुबह का भूला
(25) ऋषि का प्रभाव

प्रकाशक : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

गोधा सदन
अलसीसर हाउस संसारचंद,
रोड जयपुर

प्राप्ति स्थान : जैन चित्र कथा कार्यालय

दि. जैन मन्दिर, गुलाब वाटिका
दिल्ली सहारनपुर रोड दिल्ली (U.P.)

तो फिर देर किस बात की आज ही ड्राफ्ट या चैक जैन चित्र कथा के नाम से भेजें
परम संरक्षक १११११ संरक्षक ५००१ आजीवन १५०१ दस वर्षीय ७०१

डाक पंजीयन—आर. जे. 2920

भावी पीढ़ी के आचार-विचार एवम सदाचार का सुसंस्कृत नव निर्माण में आप अपना सहयोग प्रदान करें।

मनो विनोद और ज्ञान वर्धन का उपयुक्त साधन
जैन संस्कृति, इतिहास तथा महावीर की वाणी को
जनजन तक पहुंचाने के लिए जैन कथाओं पर आधारित

जैन चित्रकथा

सम्पादक: धर्मचन्द शास्त्री

Printed by: SHAKUN PRINTERS, 3625 Darya Ganj, New Delhi-2. Phone: 271818